UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

भूगोल

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

भूगोल (14)

MODEL PAPER (RBSE) 6

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 56

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
6. प्रश्नों का अंक भार निम्नानुसार है।

खण्ड	प्रश्न की संख्या	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	कुल अंक भार
खण्ड- अ (A)	1 (i to ix) 2 (i to iv) 3 (i to iv)	17	1	17
खण्ड- ब (B)	4 से 15	12	1½	18
खण्ड- स (C)	16 से 18	3	3	9
खण्ड- द (D)	19 से 20	2	4	8
खण्ड- य (E)	21 से 22	2	2	4

7. प्रश्न क्रमांक 21 से 22 मानचित्र कार्य से संबंधित हैं और प्रत्येक 2 अंक का है।
8. भारत एवं विश्व के उपलब्ध कराये गये रेखा मानचित्रों को उत्तर पुस्तिका के साथ नत्थी करें।

खण्ड-अ

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) जनसंख्या वितरण व घनत्व को प्रभावित करने वाला सामाजिक कारक है- [1]

(अ) राजनीतिक अशांति (ब) औद्योगीकरण
(स) नगरीकरण (द) जल

(ii) मानव विकास सूचकांक (H.D.I.) के परिकलन में कौनसा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है? [1]

(अ) संसाधनों तक पहुँच (ब) सरकारी नीतियाँ
(स) स्वास्थ्य (द) शिक्षा

(iii) उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में की जाने वाली कृषि, जिसका विकास यूरोपीय लोगों द्वारा औपनिवेशिक काल में किया गया- [1]

(अ) मिश्रित कृषि (ब) भूमध्य सागरीय कृषि
(स) डेरी कृषि (द) रोपण कृषि

(iv) परिवहन दूरी को मापने का रूप नहीं है- [1]

(अ) मार्ग लम्बाई की वास्तविक अर्थात् 'किलोमीटर दूरी'
(ब) यात्रा करने में लगने वाला समय अर्थात् 'समय दूरी'
(स) मार्ग पर यात्रा का खर्च अर्थात् 'लागत'दूरी
(द) मार्ग पर आने वाले प्राकृतिक भूदृश्य अर्थात् 'प्राकृतिक दूरी'

(v) समतल क्षेत्रों व अन्तरा पर्वतीय चौड़ी घाटियों में ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप पाया जाता है- [1]

(अ) आयताकार (ब) वृत्ताकार
(स) तारा प्रतिरूप (द) क्रॉस आकार

(vi) भौम जल का अधिकतम उपयोग करने वाले राज्य है- [1]

(अ) छतीसगढ़ - केरल (ब) ओडिशा - बिहार
(स) महाराष्ट्र - त्रिपुरा (द) राजस्थान-तमिलनाडु

(vii) रूस के सहयोग से स्थापित लौह - इस्पात संयंत्र हैं- [1]

(अ) राऊरकेला, दुर्गापुर (ब) कुल्टी, बर्नपुर
(स) भिलाई, बोकारो (द) सेलम, बर्नपुर

(viii) भरमौर जनजातीय क्षेत्र कहाँ स्थित है? [1]

(अ) जम्मू कश्मीर (ब) हिमाचल प्रदेश
(स) उत्तराखण्ड (द) असम

(ix) भारत में ग्रामीण-नगरीय प्रवास का मुख्य कारण है- [1]

(अ) शिक्षा (ब) मनोरंजन
(स) रोजगार (द) प्रशासन

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
(i) संभववाद अवधारणा के अन्तर्गत ..... का मानवीकरण हो जाता है। [1]
(ii) 15 - 59 वर्ष आयु वर्ग ..... जनसंख्या को इंगित करता है। [1]
(iii) विश्व का सर्वाधिक लम्बा रेलमार्ग ..... है। [1]
(iv) जनसंख्या - संसाधनों के अनुपात पर चिंता व्यक्त करने वाले प्रथम विद्वान ..... थे। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-
(i) मानव भूगोल मुख्य रूप से किसका अध्ययन करता है? [1]
(ii) चलवासी पशुचारकों की संख्या क्यों घट रही है? [1]
(iii) गंदी बस्तियों के कोई दो लक्षण बताइए। [1]
(iv) जल उपकर अधिनियम - 1977 का प्रमुख उद्देश्य क्या था? [1]

खण्ड - ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न-
4. जनसंख्या की वृद्धि एवं वृद्धि दर में क्या अन्तर हैं? [1½]
5. मानव विकास के तीन स्तम्भ बताइए। [1½]
6. स्वेज नहर पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए। [1½]
7. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अस्तित्व में क्यों है? समझाइए। [1½]
8. विकासशील देशों में मानव बस्तियों की तीन समस्याएँ बताइए। [1½]
9. 1981 के बाद भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में आई गिरावट के दो कारण बताइए। [1½]
10. भारत से विदेश की ओर हुए प्रवास की दूसरी तरंग की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। [1½]
11. ग्रामीण एवं नगरीय बस्तियों में दो मुख्य अन्तर बताइए। [1½]
12. खनिजों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए। [1½]
13. इंदिरा गाँधी नहर के तीन सकारात्मक प्रभाव लिखिए। [1½]
14. भारत द्वारा आयात व निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तुओं के नाम लिखिए। [1½]
15. 'व्यापार संयोजन' से क्या आशय है? [1½]

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-
16. चतुर्थक क्रियाओं की व्याख्या कीजिए। [3]
17. उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले किन्ही तीन कारकों की व्याख्या कीजिए। [3]
18. चौड़ाई के आधार पर भारतीय रेल पटरियों के वर्गीकरण को समझाइए। [3]

खण्ड - द

निबन्धात्मक प्रश्न–
19. कच्चे माल पर आधारित उद्योगों के किन्हीं चार प्रकारों का विस्तृत विश्लेषण कीजिए। [4]

अथवा

द्वितीयक गतिविधियों की व्याख्या करते हुए यह समझाइए कि 'उद्योग' एवं 'विनिर्माण उद्योग' किस प्रकार भिन्न हैं? [4]

20. भारत में फ़सल ऋतुओं व कृषि के प्रकारों का वर्णन कीजिए। [4]

अथवा

भारत में चावल की कृषि पर लेख लिखिए। [4]

खण्ड - य

21. दिए गए भारत के मानचित्र में निम्न लौह इस्पात उद्योग केन्द्रों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) राउरकेला
(ब) बोकारो
(स) भिलाई
(द) भद्रावती

22. दिए गए विश्व के मानचित्र में निम्न समुद्री पत्तनों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) केपटाउन
(ब) न्यूयॉर्क
(स) मेलबर्न
(द) कराची

उत्तरमाला – 06

खण्ड - अ

1.

(i) **[अ]**

जनसंख्या वितरण– घनत्व को प्रभावित करने वाला सामाजिक कारक राजनीतिक अशांति है। औद्योगीकरण व नगरीकरण आर्थिक तथा जल भौतिक कारक हैं, जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं।

(ii) **[ब]**

मानव विकास सूचकांक के परिकलन में जिन महत्त्वपूर्ण घटकों को सम्मिलित किया जाता हैं, वे हैं- स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संसाधनों तक पहुँच। सरकारी नीतियाँ इसमे सम्मिलित नहीं हैं।

(iii) **[द]**

रोपण कृषि, जिसे बागान कृषि भी कहा जाता है, यूरोपीय देशों द्वारा औपनिवेशिंक काल में उष्ण कटिबंधीय देशों में प्रारम्भ की गई।

(iv) **[द]**

परिवहन दूरी को किलोमीटर दूरी, समय दूरी व लागत दूरी के रूप में मापा जा सकता हैं। इसे प्राकृतिक दूरी में नहीं मापा जाता है।

(v) **[अ]**

समतल क्षेत्रों व अन्तरा पर्वतीय चौड़ी घाटियों में ग्रामीण बस्तियों का आयताकार प्रतिरूप पाया जाता है, जबकि वृताकार-झीलों व तालाबों के चारों ओर, तारा प्रतिरूप ऐसे स्थान पर जहाँ कई मार्ग आकर मिलते हो तथा क्रॉस प्रतिरूप चौराहों के चारो दिशाओं में बनते हैं।

(vi) **[द]**

भौमजल के अत्यधिक उपयोग करने वाले राज्यों में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व तमिलनाडु प्रमुख हैं। छत्तीसगढ़, ओडिशा, केरल आदि राज्य अपने भौमजल क्षमता का बहुत कम उपयोग करते हैं।

(vii) **[स]**

लौह-इस्पात संयंत्रों में भिलाई व बोकारो संयंत्रों की स्थापना रूस के सहयोग से, राउरकेला संयंत्र की स्थापना जर्मनी के सहयोग से तथा दुर्गापुर संयंत्र की स्थापना यूनाइटेड किंगडम के सहयोग से हुई।

(viii) **[ब]**

भरमौर जनजातीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले में स्थित है। इस क्षेत्र में 'गद्दी' जनजातीय समुदाय का निवास है।

(ix) **[स]**

भारत में ग्रामीण-नगरीय प्रवास का मुख्य कारण रोजगार है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के निम्न अवसर तथा नगरीय क्षेत्रों में मज़दूरों की अधिक माँग प्रवास को प्रेरित करने वाले मुख्य कारक हैं।

2.

(i) प्रकृति

(ii) कार्यशील

(iii) पार-साइबेरियन रेलमार्ग

(iv) रॉबर्ट माल्थस

3.

(i) मानव भूगोल 'भौतिक/प्राकृतिक एवं मानवीय जगत' के बीच संबंधों का अध्ययन करता है।

(ii) चलवासी पशुचारकों की संख्या घटने के दो कारण हैं- (i) राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण, (ii) कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाना।

(iii) गंदी बस्तियों के दो लक्षण निम्नलिखित हैं- (i) जीर्ण-शीर्ण मकान (ii) खुली हवा का अभाव।

(iv) जल उपकर अधिनियम - 1977 का प्रमुख उद्देश्य जल स्रोतों में प्रदूषण कम करना था।

खण्ड - ब

4. **जनसंख्या वृद्धि-** दो समय अंतराल के बीच किसी क्षेत्र विशेष में होने वाले जनसंख्या में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जनसंख्या वृद्धि को सदैव **निरपेक्ष संख्या** के रूप में व्यक्त किया जाता है।

जनसंख्या वृद्धि दर- दो समय अंतराल के बीच किसी क्षेत्र विशेष में होने वाले जनसंख्या में परिवर्तन को जब **प्रतिशत** में व्यक्त किया जाता है, तो यह जनसंख्या की वृद्धि दर कहलाती है।

5.

- **समता-** समता का आशय प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों के लिए समान पहुँच की व्यवस्था करना है।
- **सतत पोषणीयता-** निर्वहन का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। सतत पोषणीय मानव विकास के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिले।
- **उत्पादकता-** उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता अथवा मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है।

6. स्वेज नहर का निर्माण (1869) मिस्र में भूमध्य सागर एवं लाल सागर को जोड़ने हेतु किया गया। यह यूरोप को हिंद महासागर में एक नवीन प्रवेश मार्ग प्रदान करती है तथा लिवरपूल एवं कोलंबो के बीच प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग की दूरी को उत्तमाशा अंतरीप मार्ग की तुलना में घटाती है। यह जलबंधकों से रहित समुद्र सतह के बराबर नहर है, जो यह लगभग 160 कि.मी. लंबी तथा 11 से 15 मीटर गहरी है।

7. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उत्पादन में विशिष्टीकरण का परिणाम है। यह विश्व की अर्थव्यवस्था को लाभान्वित करता है, यदि विभिन्न राष्ट्र वस्तुओं के उत्पादन या सेवाओं की उपलब्धता में श्रम विभाजन तथा विशेषीकरण को प्रयोग में लाएँ। हर प्रकार का विशिष्टीकरण व्यापार को जन्म दे सकता है। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वस्तुओं और सेवाओं के तुलनात्मक लाभ, परिपूरकता व हस्तांतरणीयता के सिद्धांतों पर आधारित होता है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

8. विकासशील देशों में बस्तियों से संबंधित कई प्रकार की समस्याएँ हैं। इनमें से तीन प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-
(i) अवहनीय जनसंख्या के केंद्रीकरण के कारण छोटे व तंग आवास एवं गलियाँ।
(ii) पीने योग्य जल जैसी सुविधाओं की कमी।
(iii) आधारभूत ढाँचा जैसे बिजली, गंदे पानी की निकासी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा आदि सुविधाओं की भी कमी।

9. **1981 के बाद भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में आई गिरावट के दो कारण निम्नलिखित हैं-**

- इस प्रकार की जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट के लिए अशोधित जन्म दर की अधोमुखी प्रवृत्ति को उत्तरदायी माना जाता है।
- यह गिरती वृद्धि दर देश में विवाह के समय औसत आयु में वृद्धि व जीवन की गुणवत्ता (विशेष रूप से स्त्री शिक्षा में सुधार) से प्रभावित हुई।

10. **प्रवासियों की दूसरी तरंग** ने नूतन समय में व्यवसायियों, शिल्पियों, व्यापारियों और फैक्टरी मजदूरों के रूप में आर्थिक अवसरों की तलाश में निकटवर्ती देशों थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ब्रूनई इत्यादि देशों में व्यवसाय के लिए गए और यह प्रवृत्ति अब भी जारी है। 1970 के दशक में पश्चिम एशिया में हुई सहसा तेल वृद्धि द्वारा जनित श्रमिकों की माँग के कारण भारत से अर्ध-कुशल और कुशल श्रमिकों का नियमित बाह्य प्रवास हुआ।

11.

ग्रामीण बस्तियाँ	नगरीय बस्तियाँ
• ग्रामीण बस्तियाँ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं से करती हैं। • ग्रामीण लोग कम गतिशील होते हैं और इसलिए उनमें सामाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं।	• ये बस्तियाँ एक ओर कच्चे माल के प्रक्रमण और तैयार माल के विनिर्माण तथा दूसरी ओर विभिन्न प्रकार की सेवाओं पर निर्भर करती हैं। • नगरीय क्षेत्रों में जीवन का ढंग जटिल और तीव्र होता है और सामाजिक संबंध औपचारिक होते हैं।

12. रासायनिक एवं भौतिक गुणधर्मों के आधार पर खनिजों को दो प्रमुख श्रेणियों – धात्विक (धातु) और अधात्विक (अधातु) में समूहित किया जा सकता है-

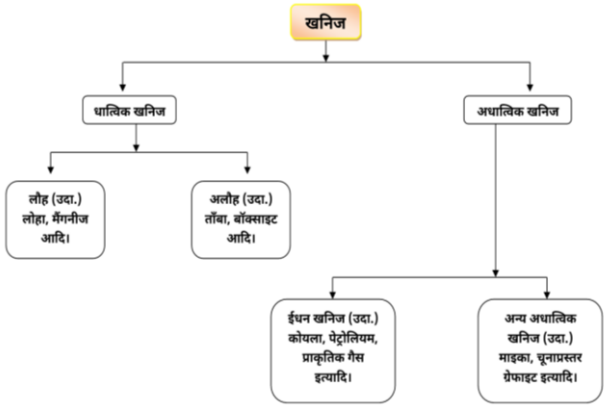

13. **इंदिरा गाँधी नहर के तीन सकारात्मक प्रभाव-**
(i) लंबी अवधि तक मृदा नमी उपलब्ध होने और कमान क्षेत्र विकास के तहत शुरू किए गए वनीकरण और चरागाह विकास कार्यक्रमों से यहाँ भूमि हरी- भरी हो गई है।
(ii) इससे वायु अपरदन और नहरी तंत्र में बालू निक्षेप की प्रक्रियाएँ भी धीमी पड़ गई हैं।
(iii) नहरी सिंचाई के प्रसार से इस प्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप में रूपांतरित हो गई है।

14. **आयात की जाने वाली वस्तुएँ**- भारत द्वारा जिन वस्तुओं का आयात किया जाता हैं, उनमें पेट्रोलियम उत्पाद, अलौह धातुएँ, मोती, बहुमूल्य एवं अल्प मूल्य रत्न तथा रासायनिक उत्पाद आदि प्रमुख हैं।
निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ- भारत विनिर्माणक समान, कृषि उत्पाद, अयस्क एवं खनिज तथा लुब्रिकेंट्स आदि वस्तुओं का निर्यात करता है।

15. **व्यापार संयोजन-** पिछली शताब्दी में, देशों द्वारा आयातित तथा निर्यातित वस्तुओं और सेवाओं के प्रकार में परिवर्तन हुए हैं। पिछली शताब्दी के आरंभ में, प्राथमिक उत्पादों का व्यापार प्रधान था। बाद में, विनिर्मित वस्तुओं ने प्रमुखता प्राप्त कर ली और वर्तमान समय में यद्यपि विश्व व्यापार का अधिकांश विनिर्माण क्षेत्र के आधिपत्य में है, सेवा क्षेत्र जिसमें यात्रा, परिवहन तथा अन्य व्यावसायिक सेवाएँ सम्मिलित हैं, उपरिगामी प्रवृत्ति दर्शा रहा है।

खण्ड-स

16. **चतुर्थक क्रियाकलाप** अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होते हैं और विशिष्टीकृत ज्ञान, प्रौद्योगिक कुशलता व प्रशासकीय सामर्थ्य से संबद्ध सेवाओं के उन्नत नमूने के रूप में देखे जाते हैं। आर्थिक वृद्धि के आधार के रूप में तृतीयक सेक्टर के साथ चतुर्थ सेक्टर ने सभी प्राथमिक व द्वितीयक सेक्टरों से रोज़गारों को प्रतिस्थापित कर दिया है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आधे से अधिक कर्मी ज्ञान के इस क्षेत्र में कार्यरत हैं तथा पारस्परिक कोष प्रबंधकों से लेकर कर परामर्शदाताओं, सॉफ्टवेयर सेवाओं की माँग में अति उच्च वृद्धि हुई है। कार्यालय भवनों, प्रारंभिक विद्यालयों, विश्वविद्यालयी कक्षाओं, अस्पतालों व डॉक्टरों के कार्यालयों, रंगमचों, लेखाकार्य और दलाली की फर्मों में काम करने वाले कर्मचारी इस वर्ग की सेवाओं से संबंध रखते हैं।

17. **उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले तीन कारक-**
(i) कच्चे माल की प्राप्ति- उद्योग के लिए कच्चा माल अपेक्षाकृत सस्ता एवं सरलता से परिवहन योग्य होना चाहिए। भारी वजन, सस्ते मूल्य एवं वजन घटने वाले पदार्थों (अयस्क) पर आधारित उद्योग कच्चे माल के स्रोत स्थल के समीप ही स्थित हैं। भारत में अधिकांश लौह इस्पात उद्योग लौह अयस्क के स्रोतों (भद्रावती, भिलाई और राउरकेला) के निकट स्थित हैं।
(ii) श्रम आपूर्ति- उद्योगों को कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है। भारत में श्रम बहुत गतिशील है तथा जनसंख्या अधिक होने के कारण बड़ी संख्या में उपलब्ध है।

(iii) शक्ति के साधन- वे उद्योग जिनमें अधिक शक्ति की आवश्कता होती है वे ऊर्जा के स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं। उदाहरण - एल्युमिनियम उद्योग।

18. रेलवे पटरी की चौड़ाई के आधार पर भारतीय रेल के तीन वर्ग बनाए गए हैं-

- **बड़ी लाइन-** ब्रॉड गेज में रेल पटरियों के बीच की दूरी 1.616 मीटर होती है। ब्रॉड गेज लाइन की कुल लंबाई सन् 2019-20 में 63950 कि.मी. थी।
- **मीटर लाइन-** इसमें दो रेल पटरियों के बीच की दूरी एक मीटर होती है। इसकी कुल लंबाई 2019-20 में 2402 कि.मी. थी।
- **छोटी लाइन-** इसमें दो रेल पटरियों के बीच की दूरी 0.762 मीटर या 0.610 मीटर होती है। इसकी कुल लंबाई 2019-20 में 1604 कि.मी. थी। यह प्रायः पर्वतीय क्षेत्रों तक सीमित है।

भारतीय रेल ने मीटर तथा नैरो गेज रेलमार्गों को ब्रॉड गेज में बदलने के लिए व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है।

खण्ड - द

19. कच्चे माल पर आधारित उद्योग- कच्चे माल पर आधारित उद्योगों का वर्गीकरण पाँच शीर्षकों के अंतर्गत किया जाता है, जिनमें से चार प्रमुख प्रकार निम्न लिखित हैं-

(i) खनिज आधारित उद्योग-

इन उद्योगों में खनिजों को कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। कुछ उद्योग लौह अंश वाले धात्विक खनिजों का उपयोग करते हैं, जैसे कि लौह इस्पात उद्योग जबकि कुछ उद्योग अलौह धात्विक खनिजों का उपयोग करते हैं जैसे एल्युमिनियम, ताँबा एवं जवाहरात उद्योग। सीमेंट, मिट्टी के बर्तन आदि उद्योगों में अधात्विक खनिजों का प्रयोग होता है।

(ii) रसायन आधारित उद्योग-

इस प्रकार के उद्योगों में प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले रासायनिक खनिजों का उपयोग होता है जैसे पेट्रो रसायन उद्योग में खनिज तेल (पैट्रोलियम) का उपयोग होता है। नमक, गंधक एवं पोटाश उद्योगों में भी प्राकृतिक खनिजों को काम में लेते हैं। कुछ रासायनिक उद्योग लकड़ी एवं कोयले से प्राप्त कच्चे माल पर भी निर्भर हैं। रसायन उद्योग के अन्य उदाहरण कृत्रिम रेशे बनाना, प्लास्टिक निर्माण इत्यादि है।

(iii) वनों पर आधारित उद्योग-

वनों से प्राप्त कई मुख्य एवं गौण उपज कच्चे माल के रूप में उद्योगों में प्रयुक्त होती हैं। फर्नीचर उद्योग के लिए इमारती लकड़ी, कागज़ उद्योग के लिए लकड़ी, बाँस एवं घास तथा लाख उद्योग के लिए लाख वनों से ही प्राप्त होती है।

(iv) पशु आधारित उद्योग-

चमड़ा एवं ऊन पशुओं से प्राप्त प्रमुख कच्चा माल है। चमड़ा उद्योग के लिए चमड़ा एवं ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए ऊन पशुओं से ही प्राप्त की जाती है। हाथीदाँत उद्योग के लिए दाँत भी हाथी से मिलता है।

अथवा

द्वितीयक गतिविधियाँ- द्वितीयक क्रियाएँ विनिर्माण, प्रसंस्करण और निर्माण (अवसंरचना) उद्योग से संबंधित हैं। प्रकृति में पाए जाने वाले कच्चे माल का रूप बदलकर यह उसे मूल्यवान बना देती है। द्वितीयक गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ जाता है।

उदाहरण-

- कपास का सीमित उपयोग है परंतु तंतु में परिवर्तित होने के बाद यह और अधिक मूल्यवान हो जाता है और इसका उपयोग वस्त्र बनाने में किया जा सकता है।
- खदानों से प्राप्त लौह-अयस्क से इस्पात बनाने के बाद यह मूल्यवान हो जाता है, और इसका उपयोग कई प्रकार की मशीनें एवं औज़ार बनाने में होता है।

'उद्योग' एवं 'विनिर्माण उद्योग'- विनिर्माण का शाब्दिक अर्थ है 'हाथ से बनाना', इसमें यंत्रों द्वारा बनाया गया सामान भी सम्मिलित किया जाता है। यह एक परमावश्यक प्रक्रिया है। जिसमें कच्चे माल को स्थानीय या दूरस्थ बाज़ार में बेचने के लिए ऊँचे मूल्य के तैयार माल में परिवर्तित कर दिया जाता है। वैचारिक दृष्टिकोण से उद्योग एक निर्माण इकाई होती है जिसकी भौगोलिक स्थिति अलग होती है एवं प्रबंध तंत्र के अंतर्गत लेखा-बही एवं रिकार्ड का रखरखाव रखा जाता है। उद्योग एक व्यापक नाम है और इसे विनिर्माण के पर्यायवाची के रूप में भी देखा जाता है। जब कोई इस्पात उद्योग और रसायन उद्योग शब्दावली का प्रयोग करता है तब उसके मस्तिष्क में कारखाने एवं कारखानों में होने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं का विचार उत्पन्न होता है। लेकिन कई गौण क्रियाएँ हैं जो कारखानों में संपन्न नहीं होती जैसे कि पर्यटन उद्योग या मनोरंजन उद्योग इत्यादि। अतः स्पष्टता के लिए 'विनिर्माण उद्योग' शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

20. भारत में फ़सल ऋतुएँ-

- **खरीफ़-** ये फसले दक्षिण-पश्चिमी मानसून के साथ बोई जाती हैं। उष्ण कटिबंधीय फ़सलें सम्मिलित हैं। उदाहरण - चावल, कपास, जूट, ज्वार, बाजरा व अरहर आदि।
- **रबी-** रबी की ऋतु अक्टूबर-नवंबर में शरद ऋतु से प्रारंभ होकर मार्च-अप्रैल में समाप्त होती है। इस समय कम तापमान शीतोष्ण तथा उपोष्ण कटिबंधीय फ़सलों जैसे गेहूँ, चना, तथा सरसों आदि फ़सलों की बुवाई में सहायक है।
- **जायद-** जायद एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फ़सल-ऋतु है, जो रबी की कटाई के बाद प्रारंभ होती है। इस ऋतु में तरबूज, खीरा, ककड़ी, सब्ज़ियाँ व चारे की फ़सलों की कृषि सिंचित भूमि पर की जाती है।

कृषि के प्रकार-

आर्द्रता के प्रमुख उपलब्ध स्रोत के आधार पर कृषि को सिंचित कृषि तथा वर्षा निर्भर (बारानी) कृषि में वर्गीकृत किया जाता है-

- **सिंचित कृषि** में भी सिंचाई के उद्देश्य के आधार पर अंतर पाया जाता है-

(i) रक्षित सिंचाई कृषि- रक्षित सिंचाई का मुख्य उद्देश्य आर्द्रता की कमी के कारण फ़सलों को नष्ट होने से बचाना है।

(ii) उत्पादक सिंचाई कृषि- उत्पादक सिंचाई का उद्देश्य फ़सलों को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराकर अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना है।

- **वर्षा निर्भर कृषि** भी कृषि ऋतु में उपलब्ध आर्द्रता की मात्रा के आधार पर दो वर्गों में बाँटी जाती है-

(i) शुष्क भूमि कृषि- भारत में शुष्क भूमि खेती मुख्यतः उन प्रदेशों तक सीमित है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम है। इन क्षेत्रों में आर्द्रता संरक्षण तथा वर्षा जल के प्रयोग की अनेक विधियाँ अपनाई जाती हैं।

(i) आर्द्र भूमि कृषि- आर्द्र कृषि क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के अंतर्गत वर्षा जल पौधों की ज़रुरत से अधिक होता है। ये प्रदेश बाढ़ तथा मृदा अपरदन का सामना करते हैं।

अथवा

भारत में चावल की कृषि-

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ- भारत की अधिकतर जनसंख्या का प्रमुख भोजन चावल है। यह एक उष्ण आर्द्र कटिबंधीय फ़सल है, इसकी 3000 से भी अधिक किस्में हैं जो विभिन्न कृषि जलवायु प्रदेशों में उगाई जाती है। इसकी कृषि समुद्रतल से 2000 मीटर तक की ऊँचाई तक एवं पूर्वी भारत के आर्द्र भागों से लेकर उत्तरपश्चिमी भारत के शुष्क परंतु सिंचित क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश व उत्तरी राजस्थान में, सफलतापूर्वक की जाती है।

दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में जलवायु अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फ़सलें बोई जाती हैं। पश्चिम बंगाल के किसान चावल की तीन फ़सलें लेते हैं जिन्हें- औस, अमन तथा बोरो कहा जाता है। हिमालय तथा देश के उत्तर-पश्चिम भागों में यह दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु में खरीफ़ फ़सल के रूप में उगाई जाती है।

उत्पादन- भारत विश्व का 22.07 प्रतिशत चावल उत्पादन करता है तथा चीन के बाद भारत का विश्व में दूसरा स्थान है (2018)। देश के कुल बोए क्षेत्र के एक-चौथाई भाग पर चावल बोया जाता है।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र- देश के प्रमुख चावल उत्पादक राज्य पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब हैं। चावल की प्रति हेक्टेयर पैदावार पंजाब, तमिलनाडु, हरियाणा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल तथा केरल राज्यों में अधिक है। पंजाब व हरियाणा पारंपरिक रूप से चावल उत्पादक राज्य नहीं है। हरित क्रांति के अंतर्गत हरियाणा, पंजाब के सिंचित क्षेत्रों में चावल की कृषि 1970 से प्रारंभ की गई। उत्तम किस्म के बीजों, अपेक्षाकृत अधिक खाद तथा कीटनाशकों का प्रयोग एवं शुष्क जलवायु के कारण फ़सलों में रोग प्रतिरोधकता आदि कारक इस प्रदेश में चावल की अधिक पैदावार के उत्तरदायी हैं।

खण्ड - य

21.

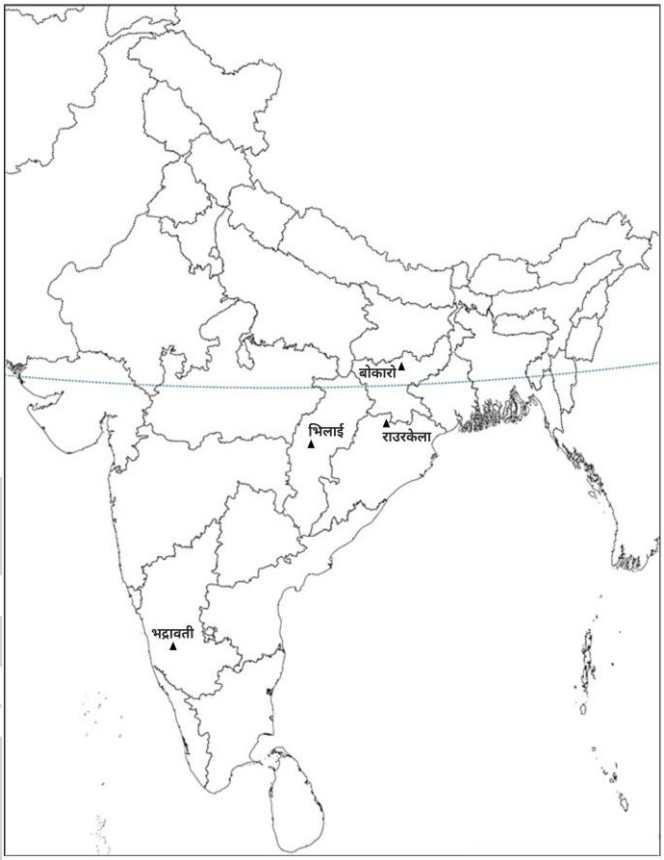

22.

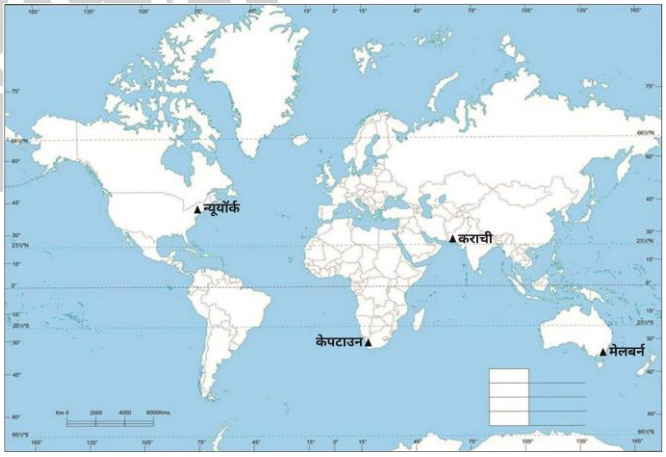

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan
कर आज ही
'उत्कर्ष एप'
डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE & Recorded Classes** • **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com